अत्यंत गोपनीय केवल आंतरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु

अंक-योजना

विषय- हिंदी (ओपन स्कूल)

कक्षा - दसवीं

सामान्य निर्देश :-

1. परीक्षार्थियों के सही और उचित आंकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी त्रुटि भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है, जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा प्रणाली और अध्यापन-व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को पढ़ और समझ लें।
2. योग्यता आधारित प्रश्नों का मूल्यांकन करते समय कृपया दिए गए उतरों को समझे, भले ही उत्तर मार्किंग स्कीम में न हो, छात्रों को उनकी योग्यता के आधार पर अंक दिए जाने चाहिए।
3. अंक योजना में उत्तरों के लिए केवल सुझाए गए मान बिंदु होते हैं। ये केवल दिशा-निर्देशों की प्रकृति के हैं और पूर्ण नहीं हैं। यदि परीक्षार्थियों की अभिव्यक्ति सही है तो उसके अनुसार नियत अंक दिए जाने चाहिए।
4. परीक्षक सही उत्तर पर सही का चिह्न (√) लगाएँ और गलत उतर पर गलत का (×)मूल्यांकनकर्ता द्वारा ये चिह्न न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है, परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए।
5. यदि किसी प्रश्न के उपभाग हो तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दायी ओर अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग बायाँ और के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए।
6. यदि किसी प्रश्न के कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए।
7. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हो, उन्हें ही स्वीकार करे, उन्हीं पर अंक है।
8. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार-बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर हर बार अंक न काटे जाएँ।
9. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में पूर्ण अंक पैमाना 0-80 (उदाहरण 0-80 अंक जैसा कि प्रश्न में दिया गया है) का प्रयोग अभीष्ट है, अर्थात परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।
10. ये सुनिश्चित करें कि उत्तर पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण के अंकों के साथ मिलान हो।
11. आवरण पृष्ठ पर दो स्तंभों के अंकों का योग जाँच लें ।
12. उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए यदि कोई उत्तर पूर्ण रूप से गलत हो तो उस पर (x) निशान लगाएँ और शून्य (0) अंक दें।
13. उत्तर पुस्तिका में किसी प्रश्न का बिना जाँचे हुए छूट जाना या योग में किसी भूल का पता लगना, मूल्यांकन समिति के सभी लोगों की छवि को और बोर्ड की प्रतिष्ठा को धूमिल करता है।परीक्षक सुनिश्चित करें कि सभी उत्तरों का मूल्यांकन हुआ है। आवरण पृष्ठ पर तथा योग में कोई अशुद्धि नहीं रह गई है तथा कुल योग को शब्दों और अंकों में लिखा गया है।

उपर्युक्त मूल्यांकन निर्देश उत्तर-पुस्तिकाओं की जाँच हेतु आदेश नहीं अपितु केवल निर्देश हैं। यदि इन मूल्यांकन निर्देशों में किसी प्रकार की त्रुटि हो, किसी प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, अंक योजना में दिए गए उत्तर से अतिरिक्त कोई और भी उत्तर सही हो, तो परीक्षक अपने विवेकानुसार उस प्रश्न का मूल्यांकन करे।

अंक-योजना

विषय- हिंदी (open school)

कक्षा - दसवीं

कोड-A

कक्षा : दसवीं अधिकतम अंक 80

सामान्य निर्देश :-

1. अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
2. वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक योजना में दिए गए उत्तर बिंदु अंतिम नहीं है बल्कि ये सुझावात्मक एवम् सांकेतिक हैं।
3. यदि परीक्षार्थी इन सांकेतिक बिंदुओं से भिन्न , किन्तु उपयुक्त उत्तर है, तो उन्हें अंक दिए जाएँ।
4. मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं बल्कि अंक योजना में दिए गए निर्देशानुसार ही किया जाए।

खंड -क

प्रश्न- संख्या उत्तर अंक विभाजन

प्रश्न-1 व्याकरण एवम् रचना पर आधारित प्रश्नों के उत्तर : 1x7=7

क. iv. बहुव्रीहि समास
ख. ii. दीर्घ संधि
ग. i. आकाश
घ. i. दुख
ड. iii. सु
च. ii. इक
छ. ii. एक मात्र सहारा
ज. ii आकाश
झ. iv उपरोक्त सभी
ञ. ii तीन

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के यथानिर्दिष्ट उत्तर दीजिए। 2x4=8 अंक

क) दोहा मात्रिक अर्द्धसम छन्द है। इसमें कुल चार चरण होते हैं। इसके पहले एवं तीसरे चरण में तेरह-तेरह तथा दूसरे और चौथे चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ होती हैं। इस प्रकार इस छन्द की प्रत्येक पंक्ति में 24 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पंक्ति के अंत में अर्थात दूसरे ओर चौथे चरण के अंत में लघु होना अनिवार्य है।

उदाहरण :करत-करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान,
रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान

ख) जहां समानता के कारण उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना की जाती है वहां उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

जैसे :उसका सिर फट गया मानो अरूण रंग का घड़ा हो।

प्रश्न- 3 किसी एक विषय पर निबंध 5 अंक

क) भूमिका 1
ख) विस्तार + निर्धारित शब्द सीमा 3
ग) उपसंहार 1

प्रश्न- 4 पत्र लेखन 5 अंक

क) आरंभ और अंत की औपचारिकताएं 1
ख) विषय वस्तु 3
ग) भाषा 1

खंड - ख (क्षितिज काव्य खंड)

प्रश्न- 5 बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर **6 अंक**

क	ii व्यंग्य का	1
ख	i. बालकाण्ड	1
ग	ii. कवि	1
घ	iii. बालकों की	1
ड़.	ii प्रकृति	1
च	i. बचपन	1
।	छ iv विद्युत	1

प्रश्न- 6 सप्रसंग व्याख्या **5**

कवि :सूरदास

कविता :सूरदास के पद

व्याख्या: विरह, की पीड़ा से आकुल गोपियों श्रीकृष्ण के मित्र उद्धव को उपालंभ देती हुई कहती हैं- है उद्धव हमारे मन की बात मन में ही रह गई है अर्थात् हमें श्रीकृष्ण के लोटने की पूरी आशा थी। हम अपने मन की बात उन्हें बता देना चाहती थीं, किंतु जब उनका यह संदेश मिलने पर कि वे नहीं आ रहे हमारे मन की बात मन में ही रह गई। हे उद्धव अब तुम ही बताओ कि अपने मन की बात को मता हम किसे जाकर कहें। प्रेम की बात हर किसी के सामने कही भी तो नहीं जा सकती। हम अब तक श्रीकृष्ण के लौट आने की आशा को अपने प्राणों का आधार बनाए हुए थीं। इसी उम्मीद पर तो हम तन-मन से विरह की व्यथा को सहन कर रही थीं, किंतु तुम्हारे इस योग साधना के संदेश को सुनकर हमारी विरह-व्यथा और भी भड़क उठी है। हम विंरह की आग में जली जा रही हैं। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि जिधर से हम अपनी रक्षा के लिए सहांरा चाह रही थीं, उधर से ही योग-साधना की धारा वह निकली है। कहने का तात्पर्य यह है कि गोपियाँ चाहती थीं कि श्रीकृष्ण आकर उनकी व्यथा को दूर करें किंतु उन्होंने ही योग-साधना का मार्ग अपनाने का संदेश भेज दिया है। इससे उनकी वियोग की ज्वाला और भी भड़क उठी है। सूरदास ने बताया है कि गोपियों कह रही हैं कि अब तो श्रीकृष्ण ने सभी लोक-मर्यादाएँ त्यां दी हैं। उन्होंने हमारे प्रेम का निर्वाह करने की अपेक्षा हमें धोखा दिया है। भला ऐसे में हम धैर्य कैसे रखें)

अथवा

कवि :नागार्जुन

कविता :यह दंतुरित मुस्कान

व्याख्या:

कवि अपने छोटे-से मुस्कुराते हुए बच्चे को देखकर कहता है कि तुम्हारी मुसकान इतनी मनमोहक है कि यह मुर्दे में भी देशअन डाल देती है अर्थात् यदि कोई जीवन से निराश हुआ व्यक्ति भी तुम्हारी इस भोली-सी हंसी को देख ले तो वह भी प्रसन्न हो कहेगा। में जब तुम्हारे इस धूल से सने हुए शरीर को देखता हूँ तो ऐसा लगता है कि कमल का जो फूल तालाब के जल में खिलता में वह मानों तालाब के जल को छोड़कर मेरी झोंपड़ी में खिल गया है। कवि के कहने का भाव है कि धूल में सना हुआ यह नन्हा-सा बातक कमल के फूल के समान कोमल एवं सुंदर है।

कवि पुनः कहता है कि हे शिशु। तुम ऐसे प्राणवान एवं सुंदर हो कि तुम्हें छूकर ही ये कठोर चट्टानें पिघलकर जल की धारा बनकर बहने लगी हैं। कवि के कहने का अभिप्राय है कि बच्चे की मधुर एवं निश्छल हँसी को देखकर कठोर एवं निर्दयी व्यक्ति का हृदय भी द्रवित हो जाता है। इस शिशु के सामने चाहे बांस का पेड़ हो अथवा बबूल का वृक्ष, शेफालिका के फूल बरसाने लगता है। कहने का भाव है कि बच्चे की मुसकान के सामने बुरे-से-बुरा व्यक्ति भी सरस बन जाता है। एक क्षण के लिए वह भी अपनी बुराई त्यागकर मुसकाने लगता है।

प्रश्न- 7 काव्य-सौंदर्य - **(3)**

(i) भाव सौंदर्य 1½

(ii) शिल्प सौंदर्य 1½

भाव - प्रस्तुत पद में लक्ष्मण ने परशुराम जी के द्वारा अभिमानपूर्वक कहे गए कथनों पर करारा व्यंग्य किया है। परशुराम जी ने अपनी शक्ति और कर्मों का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया है ताकि सभी उपस्थित लोग उनके कथनों से भयभीत हो जाएँ। किंतु लक्ष्मण ने स्पष्ट शब्दों में उन्हें समझा दिया कि उनके कुल में देवता, ब्राह्मण व गाय पर शस्त्र नहीं उठाते। इससे पाप लगता है। लक्ष्मण के इस कथन से अभिप्राय है कि यदि वह ब्राह्मण न होता तो वह उसे युद्ध के लिए ललकार देता और उनकी शक्ति का परीक्षण भी हो जाता।

शिल्प - भाषा - अवधी

छंद - दोहा

अलंकार -अतिशयोक्ति अलंकार

व्यंजना- शब्द शक्ति,

वीर रस, ओज गुण का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न- 8 प्रश्नों के उत्तर **3+2= 5 अंक**

(क). कवि आत्मक्रया लिखने से इसलिए बचना चाहता है क्योंकि उसका जीवन साधारण सा रहा है उसमें ऐसा कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है जिसे पढ़कर लोगों को सुख व आनंद प्राप्त हो सके। फिर उसके जीवन में दुख और अभावों की भरमार रही है। जिन्हें कवि दूसरों से बाँटना नहीं चाहता। उसके मन में किसी के प्रति अनुरक्ति की भावना थी। उसे भी कभी बांटना नहीं चाहता। कवि द्वारा आत्मकथा न लिखने के ये ही कारण रहे हैं।

(ख). उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते एवं तेल की गगरी से की गई है। जिस प्रकार कमल का पत्ता पानी में रहता हुआ भी उससे प्रभावित नहीं होता अर्थात् उस पर पानी की बूंदों के दाग नहीं पड़ते और तेल की गगरी भी चिकनी होती है। उस पर पानी की बूंदें भी नहीं ठहर सकतीं। ठीक इसी प्रकार उद्धव पर भी श्रीकृष्ण के प्रेम का प्रभाव नहीं पड़ सका।

प्रश्न- 9 क्षितिज (गद्य -खंड) के आधार पर निम्नलिखि बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर **(6)**

क. (iii) चश्में की 1

ख (i) कार्तिक 1

ग (ii) खंजड़ी 1

घ (ii) यश लिप्सा 1

ङ (ii) सिर 1

च (ii) मार्क्स 1

छ (i) चिंतन शील 1

प्रश्न- 10. सप्रसंग व्याख्या (5)

पाठ -नेता जी का चश्मा , लेखक - स्वयं प्रकाश

व्याख्या : कैप्टन गरीब एवं अपाहिज है, किंतु देशभक्त है। यद्यपि पानवाला स्वस्थ है, तयापि देशभक्त नहीं है। हालदार साहब जब पान खाने के लिए कस्बे के चौराहे पर रुके तो उन्होंने पानवाले से कैप्टन के विषय में पूछा तो उसने कैप्टन के लिए बुट्टा, कमज़ोर, मरियल लंगड़ा, पागल आदि शब्दों का प्रयोग किया और उसका मज़ाक उड़ाया। किंतु हालदार साहब को किसी देशभक्त का इस प्रकार मजाक उड़ाना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने मुड़कर देखा तो हैरान रह गए कि एक बहुत ही कमज़ोर बूढ़ा, लंगड़ा आदमी सिर पर गाँधी टोपी और आँखों पर काला वश्मा लगाए एक हाथ में छोटी-सी संदूकची जऔर दूसरे हाथ में एक बॉस पर देंगे हुए बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था तथा अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बॉल टिका रहा था। उसके पास अपनी दुकान भी नहीं है। वह तो चश्मे बेचने के लिए फेरी लगाता है। हालदार साहब यह सब देखकर हैरान थे। वे जानना चाहते थे कि फिर इस व्यक्ति को कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यह इसका वास्तविक नाम है, किंतु पानवाले ने उसके विषय में और अधिक बात करना मना कर दिया। उधर ड्राइवर भी बेचैन था और हालदार साहब को काम भी था। अतः वे जीप में बैठकर चले गए। इस प्रकार हालदार साहब को कैप्टन के विषय में अधिक जानकारी नहीं मिल सकी, किंतु यह निश्चित है कि हालदार साहब को देशभक्तों का मज़ाक उड़ाने वाले लोग पसंद नहीं है।

अथवा

पाठ : लखनवी अंदाज। लेखक :यशपाल

इन पंक्तियों में लेखक ने बताया है कि लेखक कल्पनाशील एवं एकांतप्रिय होते हैं। वे आसपास के जीवन को ग़हराई से देखते हैं तथा मानव मनोविज्ञान में भी रुचि रखते हैं। लेखक सामने बैठे नवाब साहब की असुविधा एवं संकोच के कारण का अनुमान लगाने लगे। संभव है, नवाब साहब ने बिल्कुल अकेले में यात्रा करने के विचार से ही सेकंड क्लास की टिकट खरीदी हो क्योंकि आम लोग सेकंड क्लास में सफर नहीं करते। अब उन्हें यह बात भी अच्छी नहीं लगी होगी कि नगर का शिक्षित व्यक्ति उन्हें मध्य श्रेणी के दर्जे में सफर करते देखें। लेखक का अनुमान है कि उसने समय काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे, किंतु अब उन्हें किसी शिक्षित व्यक्ति के सामने खीरे खाने में संकोच हो रहा हो। कहने का भाव है कि नवाब साहब अपने-आपको अमीर व्यक्ति दिखाने का प्रयास कर रहे थे, जबकि वास्तव में वे थे नहीं। खीरा एक अति साधारण फल है। लेखक के सामने खीरा खाने से नवाच साहब की हेठी होती थी। इसलिए वह खीरे को कैसे खा सकता था।

प्रश्न-11 लेखक/लेखिका परिचय **5**

क) जीवन परिचय 1

ख) प्रमुख रचनाएँ 1

ग) साहित्यिक विशेषताएँ 1½

घ) भाषा -शैली 1½

प्रश्न- 12. प्रश्नों के उत्तर **3 अंक**

(क) निश्चय ही चश्मे वाला कभी सेनानी नहीं रहा। वह भले ही गरीब एवं अपाहिज था, किंतु उसके मन में देशभक्ति की असीम भावना थी। वह देशभक्त सुभाषचंद्र बोस का सम्मान करता था। वह सुभाष की विना चश्मे की मूर्ति को देखकर दुखी हो उड़ा था। इसलिए उसने सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति पर अपने पास से चश्मा लगा दिया था। उसकी इस देशभक्ति की भावना को देखकर ही उसे सुभाषचंद्र बोस का साथी होने का तथा उनकी सेना का कैप्टन होने का सम्मान दिया था। भले ही उसका यह नाम लोगों ने व्यंग्य में रखा हो। किंतु वास्तविकता यह थी कि वह इस नाम के योग्य भी था।

अथवा

(ख) भारतवर्ष के किसी भी कोने में संगीत का आयोजन होता था तो वहीं सर्वप्रथम बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई के मांगलिक स्वर अवश्य सुने जाते थे। संगीत आयोजन बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई के अभाव में अधूरे एवं फीके लगते थे। विस्मिल्ला खों का मतलब उनकी शहनाई, शहनाई का मतलब उनका हाव और हाथ से आशय उनकी शहनाई से सुरों का निकलना। फिर देखते-ही-देखते
संपूर्ण वातावरण सुरीला हो उठता था। अतः यह कहना उचित ही है कि विस्मिल्ला खाँ और शहनाई एक-दूसरे के पूरक हैं।

खंड - घ (कृतिका भाग -2)

प्रश्न-13. कृतिका भाग -2 के आधार पर किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर 2+2+3= 7अंक

क

(i) बच्चा सदैव अपने साथियों में खेलना व रहना पसंद करता है। भोलानाथ भी एक साधारण बालक था। उसे अपने साथियों के साथ खेलने में गहरा आनंद मिलता था। वह अपने साथियों को शोर मचाते, शरारतें करते और खेलते हुए देखकर सब कुछ भूल जाता है। इसी मग्नावस्था में वह सिसकना भी भूल जाता था।

(ii) लेखक का मत है कि सच्चा लेखन भीतरी मजबूरी या विवशता से ही उत्पन्न होता है। यह मजबूरी मन के भीतर से उत्पन्न अनुभूति से ही जगती है। बाहरी घटनाओं या दबाव से उत्पन्न नहीं होती। जब तक किसी लेखक का हृदय अनुभव के कारण पूरी तरह संवेदनशील नहीं हो उठता, उसमें अभिव्यक्ति की आकुलता पैदा नहीं होती, तब तक वह कुछ लिख नहीं पाता।

(iii) गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर इसलिए कहा गया है क्योंकि यहां के लोग बहुत मेहनत करते हैं और अपनी जीविका कमाने के लिए संघर्ष करते हैं, भले उनके पास संसाधन कम हो । गंतोक की भौगोलिक स्थिति और आर्थिक गतिविधियों के कारण लोगों को अपनी आजीविका चलाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

(ख) (i) श्वेत पताकाएँ किसी बौद्ध धर्म के अनुयायी की मृत्यु पर फहराई जाती हैं। किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाने पर नगर के बाहर वीरान स्थान पर मंत्र-लिखित एक सौ आठ पताकाएँ फहराई जाती हैं। उन्हें उतारा नहीं जाता। वे धीरे-धीरे स्वयं नष्ट हो जाती हैं। रंगीन पताकाएँ काम के शुभारंभ के समय फहराई जाती हैं।

(ii) लेखक हिरोशिमा गया और वहाँ के विस्फोट के दुष्परिणामी को प्रत्यक्ष रूप में देखकर भी विस्फोट का भोक्ता नहीं बन सका था।। किंतु एक दिन जब लेखक जापान के हिरोशिमा नगर की सड़क पर घूम रहा था, अचानक उसकी नज़र एक पत्थर पर पड़ी। उस पत्थर पर एक मानव की छाया छपी हुई

थी। वास्तविकता यह है कि विस्फोट के समय कोई मनुष्य उस पत्थर के समीप खड़ा होगा। रेडियम-धर्मी किरणों ने उस मनुष्य को भाप की तरह उड़ाकर उसकी छाया पत्थर पर डाल दी। उसे देखकर लेखक के मन में एक अनुभूति जगी थी। उसके मन में विस्फोट का प्रत्यक्ष दृश्य साकार हो उठा। उस समय वह विस्फोट का भोक्ता बन गया था।

खंड -ङ आदर्श जीवन मूल्य मध्यमा

प्रश्न .14 (क). गुरु के प्रति आदर भाव, अनुशासन, धैर्य, लक्ष्य निर्धारितक करना आदि गुण आदर्श शिष्य के अंदर होने चाहिए।

(ख)शक्ति पैदा करने के लिए ज्ञान चाहिए। योग सिद्ध व्यक्ति स्वयं ही इसको आत्मा में पा लेता है। यह आवश्यक नहीं कि यह ज्ञान हमें से ही प्राप्त हो। यदि हमें अपने घड़ों से बड़ा भी ज्ञान मिले तो उसे प्राप्त करने में संकोच नहीं नहीं करना चाहिए

(ग़) मनुष्य की श्रेष्ठता कैसे आंकी जा सकती है? मनुष्य की श्रेष्ठता उसकी सफलता से आंकी जा सकती. है। मनुष्य धर्म अर्थात नीति , न्याय, सद्गुण, परहित की मानवता के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त करे। । वह अपने कार्य में सफल हो यही उसकी श्रेष्ठता है।

(घ) बिजली का उत्पादन करने से उन्हें क्या लाभ मिल का उत्पादन करने से उन्हें यह लाभ मिला कि अपनी कंपनी के लिए पर्याप्त बिजली मिलने लगी। इसके साथ ही उन्होंने 4.5 किलोमीटर पाइपलाइन बिछाकर अन्य कंपनियों को भी गैस बेचकर उनकी ईंधन की समस्या का समाधान किया। आज यहाँ पर लगभग 2000 यूनिट बिजली का उत्पादन होता

(ङ) उत्साहपूर्वक जीवन जीने से मनुष्य जीवन के किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है। उसके जीवन में दृढ़ता बनी रहती है।